# एड्स

अखिलेश कुमार

एक दिसम्बर को एड्स दिवस मनाया जाता है।
सभी को इसके विषय में अवगत कराया जाता है।।
ह्यूमन इम्यूनो-डेफ़ीशिएन्सी वायरस है एक अति सूक्ष्म विषाणु।
यहाँ तक कि इससे डरते हैं जीवाणु।।
यह खून के जरिये ही हमारे शरीर में आता है।
रेट्रो-वायरस को सिर्फ यही मार्ग भाता है।।
इसकी बड़ी सफल है रणनीति।
ताज्जुब है, कूट-कूटकर भरी हुई है इसमें कूटनीति।।

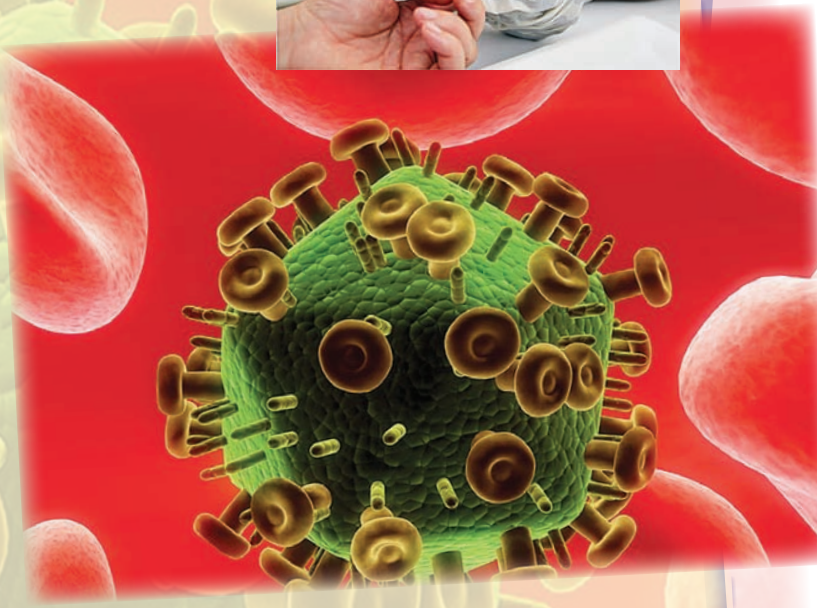

दुश्मन की तरह यह हमारे शरीर में आता है।
प्रतिरोधकता को ही अपना दोस्त बनाता है।।
रक्त में ही रहकर करता है, डब्ल्यू.बी.सी. से बैर।
आर.एन.ए. व प्रोटीन कोड को क्षय कर उसमें होता है तैर।।
फिर करता है, यह उसी पर राज।
ठप कर देता है, उसका हर काम-काज।।
इसकी मार से प्रतिरोधकता हो जाती है त्रस्त।
जिससे हमारी अंग-प्रणाली हो जाती है पस्त।।
प्रतिरोधकता खुद एच.आई.वी. के चंगुल में फंस जाती है।
जिसे दुनिया की कोई भी शक्ति नहीं बचा पाती है।।
फिर वो घोर करता है अत्याचार।
जिससे व्यक्ति हो जाते हैं लाचार।।
फिर क्या कहना, विभिन्नोपयोगी सूक्ष्म रोगाणु आयेगा।
डायरिया, टी. वी. तथा कैंसर जैसे रोगों को तीव्र फैलायेगा।।
चला दो ऐसा अभियान, कि सारी दुनिया को हो जाए ज्ञान।
हर कोई डिस्पोज़ेबल-सिरिंज अपनायेगा,
चिकित्सकों की सलाह गले लगायेगा।।
जाग सको तो जल्द जागो।
एच.आई.वी. नादान वायरस को पहचानो।।
अपने व अपने जींस वंशज को एड्स से बचाओ।।
हम लोग इंसान हैं, इसलिए,
अपनी काया पर करना होगा भरोसा।
सफल कीजिए यह अभियान,
अपना जो एड्स ने परोसा।।

*संपर्क सूत्र :*
**श्री अखिलेश कुमार, विज्ञानाचार्य,**
**सरस्वती शिशु विद्या मंदिर, फतुहा, पटना (बिहार)**